International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु बंदिशो का माध्यम–

कुमार प्रशान्त भारती

सहायक प्राध्यापक (संगीत) शिक्षा संकाय, साहेबगंज महाविधालय साहेबगंज (झारखण्ड)

सार संक्षेपिका

शास्त्रीय संगीत के प्रचार में "बंदिश" एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं। बंदिश एक विशिष्ट राग में सेट की गई एक निश्चित रचना हैं। बंदिश का अर्थ हैं बंधा हुआ जो स्वरों में किसी ताल व लय में एवं किसी काव्य में बंधी होती हैं। उसे बंदिश कहते हैं। सामान्य भाषा में हम बंदिश को सीमा भी कहते हैं। बंदिश मानक संरचित गायन हेतु संगीत को साहित्यिक प्रदान करती हैं। बंदिश हिन्दुस्तानी गायन और वादन संगीत में प्रयोग की जाती है। यह संगीत को समझने उसकी सराहना करने में मदद करती हैं। बंदिश शास्त्रीय संगीत के प्रचार में कई मदद करती हैं। बंदिशों को रेडियो, टीवी, और अन्य मीडिया के माध्यम से प्रसारित किया जा सकता हैं, जिससे अधिक लोग शास्त्रीय संगीत से परिचित हो सकते हैं। बंदिश की मधुरता और जटिलता श्रोताओं में शास्त्रीय संगीत के प्रति रूचि बढ़ाती हैं। बंदिश संगीतकारों को नई–नई रचनाए बनाने के लिए प्रेरित करती हैं। जिससे शास्त्रीय संगीत में नई प्रतिमाएं उभर कर आती हैं। बंदिश का महत्व शास्त्रीय राग संगीत, लोक संगीत और सुगम संगीत सभी में हैं,बंदिश एक प्रकार का दर्पण हैं। जिसमें रागों का स्वरूप उस समय के रीति–रिवाजों का स्वरूप और भगवद् स्वरूप की झाँकी मिलती हैं। भारतीय संगीत में बंदिश की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही हैं। आप अक्सर संगीत के कार्यक्रमों में बंदिश सुन सकते हैं,, ये संगीतकार अपनी बंदिशों के माध्यम से राग की सुन्दरता को प्रदर्शित करते हैं और श्रोताओं को आनंद प्रदान करते हैं। कुल मिलाकार बंदिश शास्त्रीय संगीत प्रचार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, क्योंकि यह संगीत को समझने में मदद करती हैं, रूचि बढ़ाती हैं और संगीत के सृजन को बढ़ावा देती हैं।

शब्द कुंजीः बंदिश, काव्य, रंजकता, पद, ताल

शास्त्रीय संगीत के प्रचार–प्रसार हेतु बंदिशो का माध्यम–

हिन्दुस्तानी गायन या वादन में बंदिश से तात्पर्य एक निश्चित सुरसहित रचना से हैं। बंदिश किसी विशेष राग में निर्मित होती हैं। इसे गाने –बजाने के साथ तबला या पखावज द्वारा ताल मिलाया जाता हैं और सारंगी, वायलिन अथवा हारमोनियम द्वारा सुस्वरता प्रदान की जाती हैं। बंदिश मानक संरचित गायन हेतु संगीत को साहित्यिकता प्रदान करती हैं। बंदिश का अर्थ तो इसका नाम देखते ही स्पष्ट हो जाता हैं। साधारणतः बंदिश ऐसी सुन्दर काव्य रचना को कहा जाता हैं जो स्वर तथा ताल वद्ध हो। यह एक रचना हैं जो एक निश्चित पैटर्न और संरचना के अनुसार व्यवस्थित की जाती हैं। नालन्दा विशाल शब्दसागर में बंदिश का अर्थ इस प्रकार बताया गया हैं। "बंदिश

संज्ञा स्त्री

1. बांधने की क्रिया का भाव
2. पहले से किया हुआ प्रबन्ध
3. गीत, कविता आदि की शब्द योजना।

डा0 सुनन्दा पाठक लिखती हैं कि "बंदिश'' का अर्थ हैं बंधी हुई रचना। जो गीत अथवा स्वर रचना, स्वर एवं छनद में समान भाव से बंधी हुई हो उसे बंदिश कहा जाता हैं।"

धर्मपाल जी बंदिश की परिभाषा इस प्रकार बताते हैं–

स्वर, ताल और लय पद्ध में सुवद्ध और सुनियोजित रचना को बंदिश शब्द कहते हैं ।

सुरसहित रचना :– बंदिश एक ऐसी रचना हैं जिसमें स्वरों का एक विशिष्ट क्रम होता हैं जो राग के नियमों के अनुसार होता हैं।

ताल और लय :– बंदिश में ताल और लय का भी एक निश्चित पैटर्न होता हैं जो आमतौर पर तबला या पखावज जैसे ताल वाधयंत्रों द्वारा बजाया जाता हैं।

काव्य :– बंदिश में अक्सर कुछ बोल भी होते हैं जो किसी विशेष काव्य से लिए जाते हैं। संगीत की अपनी एक विशेषता हैं, उसका विस्तृत प्रभाव क्षेत्र हैं, अतः उसके प्रभाव को हमें कम नहीं समझना चाहिए। काव्य में भी नाद ;संगीतद्ध चाहे कम स्वरों का प्रयोग हो पर प्रयोग होता है। उसके गेय रूप में हैं पर संगीत शब्दों के अधीन नही है। उपरोक्त विचारधारा के अलावा एक अन्य विचार धारा है, जिसमें काव्यकला तथा संगीतकला दोनों को समान श्रेणी का मानते है। मिल्टन ने कहा हैं कि काव्य तथा संगीत परस्पर बहिनें हैं।

बंधन :– बंदिश शब्द का अर्थ हैं "बंधना" या "बांधा" यह रचना किसी विशेष राग, ताल और काव्य के नियमों के अनुसार बंधी होती हैं।

उपयुक्त प्रमाणों से यह सिद्ध होता हैं कि बंदिश ऐसी खुबसुरत साहित्यिक रचना को कहा जाता हैं, जो किसी राग के स्वरों व ताल में निबद्ध हो। शास्त्रीय संगीत में बंदिशों के कई प्रकार मिलते हैं, जो इस प्रकार हैं।

ख्यालः ख्याल यह फारसी भाषा का शब्द हैं। जिसका अर्थ हैं विचार या कल्पना राग नियमों का पालन करते हुए अपनी इच्छा या कल्पना के अनुसार विविध आलाप तानों का विस्तार करते हुए एवं राग का स्वरूप स्थापित करते हुए गाना ही ख्याल है। इस गायन का प्रचार अदारंग और सदारंग ने बहुत किया है। ख्याल गायन में स्थाई और अन्तरा दो भाग होते हैं। इसमें अलापकारी अधिक होती हैं और गायक अलाप द्वारा ही राग के स्वरूप को प्रगट करता है। इसका आरंभ कब हुआ यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है। कहा जाता हैं कि प्राचीन काल में प्रबंध और रूपक दो प्रकार की गायन शैली थी। अमीर खुसरो ने ख्याल गायकी का परिशोधन किया। चौदहवी शदी में जौनपुर के सुल्तान हुसैन शाह ने ख्याल के विशेष प्रोत्साहित किया। 18 वी शदी में मुगल सम्राट मुहम्मद शाह के समय में इसकी पुनः पुछ हुई। उनके दरवार में सदारंग और अदारंग नामक दो गायक थे जो तानसेन के वंशज कहे जाते हैं। इन लोगों ने हजारों की संख्या में ख्याल की रचना की और अपने शिष्यों में उनका प्रचार प्रसार किया। ख्याल दो प्रकार का माना गया हैं। विलंबित और द्रुत ख्याल जिस ख्याल की रचना ध्रुपद शैली पर होती हैं वह विलंवित लय और तिलवाड़ा, झुमरा, झाड़ा चौताता अथवा एक ताल में गाया जाता हैं। इसे बड़ा ख्याल भी कहते हैं। जो ख्याल चपल चाल से त्रिताल, एक ताल अथवा झपताल में गाया जाता हैं वह द्रुत ख्याल हैं, उसे छोटा ख्याल भी कहते हैं। बड़े ख्याल की रचना सदारंग और अदारंग ने की थी। उनसे पहले शास्त्रीय संगीत के रूप में ध्रुपद –धमार और छोटा ख्याल गाया जाता था। आजकल महफिलों मे गायक पहले बड़ा ख्याल उसके बाद छोटा ख्याल दोनों गाते हैं। ख्याल गायकी के बहुत सारे घराने हैं और उनमें प्रत्येक के गाने ढंग अपना–अपना हैं।

ख्याल के स्थायी और अंतरा दो भाग हैं। गायक पहले बंदिश बाँधकर आलाप और तान द्वारा स्वर का विस्तार करता हैं और फिर धीरे–धीरे राग की इमारत उभारता है। जो गायक अपनी प्रतिमा द्वारा ख्याल की कल्पना पूर्ण सजावट करने की क्षमता रखता हैं वही ख्याल का श्रेष्ठ गायक माना जाता हैं, ख्याल का मुख्य इस समान्यतः विप्रलंभ श्रृंगार हैं।

छोटा ख्याल :– छोटा ख्याल तीन ताल में गाया जाता हैं। इसकी गति चपल होती हैं। इसमे तानें छोटे–छोटे ली जाती हैं तथा बोल तान का भी प्रयोग किया जाता हैं।

उदाहरण :– तीन ताल में राग–यमन (बंदिश)

आरोह – सा, नि. रे ग मे प ध नि सां

अवरोह – सां नि ध प मे ग रे सा

पकड़ – नि. रे ग रे सा, प मे ग रे सा

जाति – सम्पूर्ण –सम्पूर्ण
वादी –गन्धार (ग)
संवादी – निषाद (नि)
गायन समय – रात्रि का प्रथम प्रहर
थाट – कल्याण

अंतरा			
1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16
		प प नी ध	मे ध प –
		गु रू बि ना	कै s से s
मे रे मे –	प – – –	प नी ध प	– मे ग –
गु न गा s	वे s s s	गु रू न मा	s ने तो s
मे रे प रे	नि. रे सा –	नि. नि. रे रे	ग – मे –
गु न न हि	आ s वे s	गु नी ज न	में s बे s`
प नी – ध	मे ध प –		
गु नी s क	हा s वे s		
स्थाई			
		प – मे –	ग – रे –
		मा s ने s	तो s रि s
गं प सां ध	सां सां सां –	सां सां गं रे	सां रें सां –
झ s वे s	स ब को s	च र न ग	हे s सा s
नि ध सां सां	नि ध प –	प ग प –	ग रे सा –
दी s क न	के s ज ब	आ s वे s	अ च प ल
सारे गमे पध निसां	निध पमे गरे सा–		
तोs ss लेs ss	सुs ss ss रs		

स्थाई
बंदिश – गुरू बिना कैसे गुन गावे
गुरू न माने तो गुन नहि आवे
गुनीजन में बेगुनी कहावे।
अंतरा
माने तो रिझावे सब को
चरन गहे सादी कन के जब
आवे अचपल ताल सुर
तानें – (1) निरे गमे पध निसां निध पमे गरे सा–
(2) निरे गमे गरे गमे पध पमे गरे सा–
(3) गरे, गमे, पध, निसां, निध, पमे, गरे, सा–
(4) पमे, गरे, गमे, पध, निध, पमे, गरे, सा–
(5) सांनि, धप, मेप, धनि, सांनि, धप, मेग, रेसा–

बड़ा ख्याल – बड़ा ख्याल एक ताल, झुमरा और आड़ा चौताल आदि में गाया जाता हैं। बड़े ख्याल में तीनों विलम्बित लय में आलाप की भांति ली जाती हैं तथा धीरे–धीरे उनकी लय को बढ़ाकर तेज किया जाता है। आजकल ख्याल गायन ही अधिक प्रचलित हैं।

एकताल में बड़ा ख्याल राग–जैजवन्ती

आरोह – सा, नि., सा, रे, ग, म, प, नि, सां

अवरोह – सां, नी, ध, प, म, ग, रेग, रेसा

पकड़ – रे ग रे सा, नी. ध. प. रे–सा

थाट – खमाज

वादी – .ऋषभ (रे)

संवादी – पंचम (प)

जाति – सम्पूर्ण –सम्पूर्ण

1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12
				रेगम रेसा	सा धनि
				झूSS लत	कृ ष्णमु
रे –	सा –	ग म	प प	घ म	गरे ग
रा S	री S	पा ल	ना झू	ला S	वS त
म प	म ग	रे ग	रे सा		
य शो	दा S	मा S	ई S		
अंतरा					
				म प	नि नि
				प व	न ब
सां सां	सां ध	नि रें	सां नी	ध प	ग म
ह त	है पा	ल ना	झू ल	त हैं	मु स
पनि सां	नी धप	म रेरे	गे रेसा		
काS S	त हैं	कृ ष्णक	न्हा ई		

झूलत कृष्ण मुरारी
पालना झूलावात यशोदा माई
पवन बहत हैं पालना मूलत हैं
मुसकात हैं कृष्ण कन्हाई।

ध्रुद पद : ध्रुपद भारतीय शास्त्रीय संगीत की एक प्राचीन और गंभीर गायन शैली हैं। यह भलिपूर्ण और आध्यात्मिक गायन शैली हैं, जिसका उद्देश्य श्रोता का अपने उच्च स्वर से जोड़ना, न कि उसे मनोरंजन कराना। ध्रुपद शब्द दो शब्दों से मिलकर बना हैं– ध्रुव और पद "ध्रुव का अर्थ हैं स्थिर या अपरिवर्तनीय और पद का अर्थ हैं गीत, कविता या छंद। ध्रुपद का अर्थ हैं स्थिर, निरंतर गायन से जो किसी विशेष राग और लय पर आधारित होता हैं ध्रुपद में गायक नाद या ध्वनियों के माध्यम से भगवान से प्रार्थना करता हैं और संगीत की शु(ता पर जोर दिया जाता हैं। अतः ध्रुपद का शाब्दिक अर्थ हुआ वह पढ़ जो निर्धारित और निश्चित हैं। ध्रुपद भारतीय शास्त्रीय संगीत के सबसे पुराने रूपों में से एक हैं जो सामदेव जैसे प्राचीन ग्रंथों से जुड़ा हुआ है। ध्रुपद के गीतो को संस्कृत या ब्रज भाषा में गाया जाता हैं। ध्रुपद को आमतौर पर मृदंग, पखावज या सितार जैसे वाधयंत्रों के साथ बजाया जाता हैं।

नाट्यशास्त्र के अनुसार वर्ण, अलंकार, गान क्रिया, यति, वाणी, लय आदि जहाँ ध्रुव रूप में परस्पर संबंध रहे, उन गीतों को ध्रुवा कहा गया हैं। जिन पदों में उक्त नियम का निर्वाह हो रहा हो, उन्हे ध्रुवपद अथवा ध्रुपद कहा जाता हैं, शास्त्रीय संगीत के पद, ख्याल ध्रुपद आदि का जन्म ब्रजभुमि में होने के कारण इन सबकी भाषा ब्रज हैं और ध्रुपद का विषय समग्र रूप ब्रज का रास ही हैं। कलांतर में मुगलकाल में ख्याल उर्दू की शब्दावली का प्रभाव भी ध्रुपद रचनाओं पर पड़ा वृंदावन के विधिवन निकुंज निवासी स्वामी वती हरिदास ने इनके वर्गीकरण और शास्त्रीयकरण का सबसे महले प्रयास किया। स्वामी हरिदास की रचनाओं में गायन, वादन और नृन्य संबंधी अनेक पारिभाषिक शब्द वाधयंत्रो के बोल एवं नाम तथा नृत्य की तालों व मुद्राओं के स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं। प्रबन्ध और ध्रुपदों में पिता–पुत्र का संबंध हैं। ध्रुप के चार भाग स्थाई अंतरा, संचारी व अयोग होते हैं। आचार्य बृहस्पति जी लिखते हैं ध्रुवपदों में देवताओं और महापुरूषों की स्तुति या होती थी। ध्रुपद अधिकतर वीर, शांत, गंभीर और श्रृंगार रस प्रधान होते हैं। ध्रुप गाया चारताल, सूलताल, झपताल, तीव्रा, ब्रहम तथा रू(ताल में किया जाता हैं। ध्रुपद गायन करने वाले कलाकारों को कलावंत अथवा ध्रुपदिये कहा जाता हैं। यह शब्द प्रधान गायकी हैं। ध्रुपद गायम के लिए फेफड़ो के ऊपर जोर अधिक लगने के कारण इसे मर्दाना गायकी भी कहा जाता हैं।

धमारः धमार का जन्म ब्रज भूमि के लोक संगीत में हुआ। इसका प्रचलन ब्रज के क्षेत्र में लोक–गीत के रूप में बहुत काल से चला आ रहा हैं। इस लोकगीत में बहुत काल से चला आ रहा हैं। इस लोक गीत में वर्ण्य –विषय राधा –कृष्ण के होली खेलने का फागुन मास की रास लिलाओं का वर्णन मिलता हैं। इस शैली का गायन अधिकतर धमार ताल में ही किया जाता हैं। इसी वजह से इसको धमार भी कहा जाने लगा। होली सम्बंधी शब्दों से युक्त ब्रज के संपूर्ण क्षेत्र में रसिया और होली जन –जन मे व्याप्त हैं। होली दो अंग से गाई जाती हैं, एक ध्रुपद अंगग से और दूसरी ख्याल या ठुमरी अंग से ध्रुवद की तरह गाई जाने वाली होली प्रायः धमार ताल में रची होती हैं अतः धमार से होली का अर्थ लिया जाता हैं। पन्द्रहवी शताब्दी के अंत और सोलाहवी शताब्दी के प्रारंभ में उस समय के संगीत को देखते हुये मानसिंह तोमर और नायक बैजूने धमार गायकी की नीव डाली। उन्होने होरी नामक लोकगीत ब्रज का लिया और उसके ज्ञान की अग्नि में तपाकर ढाल दिया। होरी गायन का प्रिय ताल दीपचंदी बन गया। होरी की बंदिश तो विभिन्न रागों जैसे राग काफी मे निव(कर दी गई। होली के गीतो की गाने के समय कभी –कभी शब्दों को लय और ताल बदलकर तीनताल या कहरवा में गाने लगे हैं और पुनः लौट कर दीपचन्दी में आ जाते हैं। इस शैली का उद्देश्य ही रोमांटिक वातावरण उत्पन्न करना था। यह गायन शैली श्रृंगार रस से ओत प्रोत हैं।

सादराः यह गीत विधा ध्रुवद धमार अंग की ही हैं परन्तु यह झपताल में सुब(होती हैं। सादरा अ(शास्त्रीय संगीत और लोकगीत के बीच की कड़ी हैं गायन की यह शैली दादरा से बहुत मिलती–जुलती हैं। सादरा गायन शैली में भाव की दृष्टि से गीतों में श्रृंगार रस और उसकी चंचलता की प्रधानता रहती हैं इसलिए इसकी प्रकृति प्रायः ठुमरी की तरह होती हैं। ठुमरी गायक सादरा भली भाँति गा सकते हैं जो कि अधिकांशतः खमाज राग में हैं। कुछ वि(ानों का ऐसा विचार हैं कि मध्यकाल में ठुमरी के साथ मिलती–जुलती एक और शैली प्रचार में आई जिसको सादरा कहा गया। इसमें लयकारी दिखाने का भी रियाज हैं। इसके अलावा आड़ी तिरछी बोल बाँट भी इसमें अच्छी लगती हैं। ध्रुपद और धमार गाने क लिए जिस प्रकार गला सुरीला व दमदार होना चाहिए उसी प्रकार सादरा गाने के लिए भी सुरीला व जोरदार होना चाहिए।

सादरा में स्वर राग की शु(ता, साहित्य का स्पष्ट उच्चारण इस गायन शैली की विशेषता हैं। यह अधिकतर झपताल में गाया जाता हैं परन्तु कुछ एक सादरे सुलताल में भी गाये जाते हैं। सादरा मुख्यताः दो अंगो ध्रुपद अंग तथा ख्याल अंग से गाया जाता हैं। ध्रुपद अंग से गाये जाने वाले सादरे का ध्रुपद की तरह स्थाई, अंतरा, संचारी, अभोग होते हैं। जिसमें ध्रुपद की तरह लयकारी व गमक का खूब प्रयोग होता हैं तथा ख्याल अंग से गाये जाने वाले सादर में ख्याल की भाँति दो भाग स्थाई व अंतरा होते हैं। जिसमें ख्याल की तरह तामें इत्यादि का प्रयोग किया जाता हैं।

चतुरंगः उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत का यह गीत प्रकार जो चार अंगों से मिलकर बना हैं साहित्य ;गीत के पदद्ध तराने के बोल सरगम व मृदंग या पखावज वादन में प्रयुक्त पाटाक्षर। इन चारों विशेषताओं से युक्त होने के कारण इस गायन शैली को चतुरंग के नाम से जाना जाता हैं।

1ण मारिफुन्नगमात् में कहा गया हैं कि चतुरंग ऐसे गाने को कहते हैं जिसका कुछ भाग सार्थक शब्दों से बना हुआ होता हैं और कुछ भाग में तराने के बोल होते हैं कुछ हिस्से में त्रिवट तराना और सरगम के बोल होते हैं। यह तरीका कम प्रचलन में हैं लेकिन बिल्कुल भी विलुप्त नही हुआ हो चतुरंग के शाब्दिक अर्थ– चार रंग के हैं।

2ण पं0 विष्णु नारायण जी लिखते हैं– चतुरंग के चार अंग होते हैं। इन चार अंगों के नाम इस प्रकार हैं– ख्याल, तराना, सरगम, त्रिवट पहले भाग में गीत के शब्द होते हैं, दुसरे भाग में तराना के बोल होते है, तीसरे भाग में उस राग में बंधी हुई छोटी सरगम होती हैं जिस राग में वह चतुरंग हो अंतिम भाग में मृदंग के शब्द अथवा छोटी सी परन होती हो।

त्रिवटः संगीत में "त्रिवट" एक ऐसी गायम शैली हैं जिसमें तबले या पखावज के बोलों को किसी राग में बांधकर गाया जाता हैं। यह तराना गायन शैली के समान हैं, लेकिन इसमें तराने के निरर्थक बोलों के बजाय, तबले या पखावज के बोलों को स्वर और ताल के साथ गाया जाता हैं। त्रिवट शास्त्रीय गायन की एक विधा हैं। जिसमें पखावज या तबले के बोलों को किसी राग में तालब(करके गीत की तरह गाया जाता हैं। इसे द्रुतलय में गाया जाता हैं और यह चंचल प्रकृति का होता हैं। त्रिवट में स्थायी और अंतरा दो भाग होते है, जैसे –तराने में यह अधिकतर तीनताल या एकताल जैसी छोटी तालों में गाया जाता हैं।

त्रिवट की उत्पत्तिः प्राचीनकाल में अगली क्रम प्रबंध के एक केवाड नामक प्रबन्ध से इस गायन शैली त्रिवट की उत्पत्ति मानी जाती हैं। दक्षिण में त्रिवट को एक अन्य नाम चोल्कुकेटु के नाम से पुकारा जाता हैं। इसकी उत्पत्ति के सन्दर्भ में ऐसी माना जाता हैं कि मृदंग, तबला आदि शैलियों के मिश्रण के परिणामस्वरूप हुआ हैं तथा त्रिवट रचनाएँ गुणीजमों द्वारा रची गई है।

तरानाः संगीत में "तराना" एक विशेष प्रकार की रचना है जो हिन्दुस्तानी शास्त्रीय गायन में इस्तेमाल होती हैं। यह फारसी और अरबी ध्वनियों से प्रेरित एवं अर्थहीन शब्दों और शब्दाशों का प्रयोग करते हैं जैसे– "ओदानी" "तोदानी" तानादेरे नारे दीम त न न दिर दिर दानि यललि लोम इत्यादि तराना माध्यम या तेज गति में लयब(पैटर्न बनाता हैं और इसकी कोई कविता नही होती हैं।

तराना रचना में दो भाग होते हैं– स्थाई और अंतरा। स्थाई भाग में राग और ताल को स्थापित किया जाता हैं, जबकि अंतरा में तानों का प्रयोग होता हैं तराना के लिए आमतौर पर तीन ताल, एक ताल, ठुमरा या अदा–चंतक जैसे तालों का उपयोग किया जाता हैं। और इसकी गति विलंबित से लेकर द्रुत तक हो सकती हैं।

तराना की शुरूआत अमीर खुसरों ने की थी और यह सूफी कविता के कलबाना रूप के समान हैं। यह रचना शु(लय की भावना को जगाती हैं और श्रोताओं के साथ गहराई से प्रतिध्वनित होती हैं। तराना में तानो का प्रयोग किया जाता हैं, और कुछ लोग द्रुत लय में सितार के बोलों को मुंह से कहते हैं।

तराना की संरचना और लय पर जोर दिया जाता हैं जबकि तराना में किसी भी कविता का कोई अर्थ नही होता तराना शास्त्रीय संगीत गायन और बाध संगीत में इस्तेमाल होता हैं।

इस गायन शैली का गायन अधिकतर तीन ताल, एक ताल तथा झपताल में किया जाता हैं। तराने का गायम प्रायःमध्य लय से प्रारंभ कर द्रुत अथवा अतिद्वत लय में समापन किया जाता हैं। तराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की एक महत्वपूर्ण रचना हैं, जो अपनी विशिष्ट लय, ध्वनियों और भावों के लिए जानी जाती हैं। जैसे कि खां साहब अस्ताद अमीर खान के गाये राग हंस ध्वनी के तराने फारसी शब्द पाये जाते हैं। इसमें गायक के कौशल के स्तर का पता चलता हैं। पुरानी पीढ़ी में पंडित विनायक राव पटवर्धन तराना गाने के लिए लिए मशहूर थे। पुरानी संगीत प्रधान हिन्दी फिल्मों के गानों में तराने सुनाई देता हैं। उदा–दिल हो तो हैं फिल्म में मन्ना डे के गाये हुए गीत "लागा चुनरी मे दाग छुपाऊँ कैसे" गाने में और फिल्म कोहिनूर में मुहम्मद रफी के गाये हुए मशहूर गीत "मधुबन में राधिका नाचे रे ....." में तराने सुनने को मिलते हैं।

निष्कर्षः ख्याल, ध्रुपद, धमार, सादरा, तराना, त्रिवट, चतुरंग, लक्षणगीत इत्यादि ये सब बंदिशों के ही माध्यम हैं। बंदिश ही राग के सभी गुण निहित होने हैं। इसी से राग का चलन वादी–संवादी जाति, भाव, रस प्रकृति तथा

स्वरूप सामने आता हैं। अगर किसी बंदिश का महानता से अध्ययन किया जाये तो राग के विषय में समस्त जानकारी प्राप्त हो जाती हैं। जिससे राग के सभी लक्षण स्वयं ही प्रगत हो जाते हैं।

इस लघु शोध कार्य में राग–यमन एवं जैजवन्ती बंदिशों पर शोध कार्य किया गया हैं। उन सभी में खोज की गई प्रचलित, अल्प, प्रचलित तथा अप्रचलित बंदिशो का सौन्दर्यपूर्वक अध्ययन साहित्य स्वस्तथा ताल पक्ष के आधार पर इस तरह किया जा रहा है।

संदर्भ सूची

1. ब्रज कला एवं संस्कृति (इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र) (गुगल)
2. Dr. Cocil Thomas Ault (9/02/2017) Folk Theatre Of Rajsthan, Partridge Publishing.
3. चौधरी, विमलकांत रोया (2000) हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत का शब्दकोश, मोतीलाल बनारसीदास (गुगल)
4. नालन्दा विशाल शब्दसागर पृष्ठ –941
   डा0 सुनन्दा पाठक संगीताणवि पृष्ड–93
   धर्मपाल किराना घराने की गायकी व बंदिशों का मूल्यांकन पृष्ठ–148
5. राज माला पृष्ठ– 115
   500 उमा मिश्रा
   काव्य और संगीत का पारस्परिक सम्बंध पृष्ठ–89
   पंडित भोलादेव जोशी
6. वसंत संगीत–विशारद पृष्ठ –238
7. https://en.wikipedia.org (श्रीवास्तव हरीश राग परिचय) भाग–2 संगीत सदन प्रकाशन (गुगल)
8. सान्याल और विदेस 2004 पृष्ठ –45, 46, 47
9. ते निजेनहुइस 1974 पृ0– 85 ;भारतीय संगीतः इतिहास और संरचनाद्ध
10. आई टीसी संगीत रिसर्च अकादमी 13/5/20 (गुगल)
11. मारिफुन्नगमात् राजा नवाब अली, अनुवादक पं0 विश्वम्भर नाथ भट्ट पृ0–22
12. रागदारी संगीत में तराना शैली परम्परा एवं सौन्दय–510
    तराना पृ0 सं9–75
13. गुरू माँ प्रभा भादुरी (साक्षत्कार दिनांक 15/05/2025)